Join Telegram-
https://t.me/bhartibhandar

Our Website-
https://thehindipage.com/blog/

Join Telegram-
https://t.me/siddhivinayakpariwarsangaria

Our Youtube Channel-
https://www.youtube.com/channel/UCJlUDM0uPIL7kEO0ZMdDcHg

कक्षा 12 हिन्दी साहित्य - अध्याय 09 'पेशोला की प्रतिध्वनि - जयशंकर प्रसाद

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

प्रश्न 1. पेशोला की प्रतिध्वनि ' कविता किस काव्य संग्रह में संग्रहीत है?
(क) कानन कुसुम
(ख) लहर
(ग) झरना
(घ) चित्राधार
उत्तर: (ख) लहर

प्रश्न 2. कवि ने 'पेशोला' किसे कहा है ?
(क) अन्नासागर को
(ख) जयसमन्द को
(ग) उदयसागर झील को
(घ) पिछोला झील को
उत्तर: (घ) पिछोला झील को

प्रश्न 3. कविता में 'गहन नियति-सा' किसके लिए प्रयुक्त हुआ है ?
(क) सौभाग्य के लिए
(ख) दुर्भाग्य के लिए
(ग) डूबने के लिए
(घ) गहराई के लिए।
उत्तर: (ख) दुर्भाग्य के लिए

अतिलघुउत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. पेशोला (पिछोला) झील कहाँ स्थित है?
उत्तर: पेशोला (पिछोला) झील उदयपुर में स्थित है।

प्रश्न 2. गौरव-सी काया किसकी पड़ी है?
उत्तर: गौरव-सी काया महाराणा प्रताप की पड़ी है।

प्रश्न 3. साँस आशा में किसकी तरह लटकी हुई है?
उत्तर: साँस आशा में मछली की तरह लटकी हुई है।

लघुउत्तरात्मक प्रश्न

प्रश्न 1. कवि लोगों को मृत क्यों मान रहा है ?
उत्तर: क्योंकि लोगों को स्वदेश के गौरवपूर्ण इतिहास तथा संस्कृति का ज्ञान नहीं है। देशवासी अपनी संस्कृति और गौरवपूर्ण इतिहास को भूल चुके हैं। देश के गौरवपूर्ण अतीत पर देशवासी न तो गौरव का अनुभव करते हैं और न ही उससे कोई प्रेरणा ही ग्रहण करते हैं। कवि ऐसे लोगों को मृत मान रहा है।

प्रश्न 2. कवि दुर्बलताओं की कसौटी किसे मानता है?
उत्तर: कवि 'प्रलयोल्का खण्ड' (प्रलयकारी पत्थर या बिजली) को दुर्बलताओं की कसौटी मानता है। मनुष्य की दुर्बलताओं की परीक्षा जीवन में आने वाली कठिन परिस्थितियों में होती है। यदि मनुष्य विपरीत परिस्थितियों में भी अटल रहता है , वही मनुष्य साहसी होता है। उसे दुर्बल नहीं माना जाता है।

प्रश्न 3. पेशोला की झील में बने महलों के प्रतिबिम्ब विषाद के शिल्प बने हुए क्यों लगते हैं?
उत्तर: उदयपुर की पेशोला झील के जल में महाराणाओं के महलों की परछाईं पड़ती है। उन महलों के प्रतिबिम्ब इस झील के जल में बनते हैं।

प्राचीन भारतीय शिल्पकला के उत्कृष्ट उदाहरण ये महल परतंत्रता रूपी दुख और भारतीय जनमानस में छाई घोर निराशा के विषाद के कारण अपना तेज खो रहे हैं। महाराणा प्रताप की प्रतिज्ञा पूरी ना होने के कारण मानो पेशोला की झील में बने महलों के प्रतिबिम्ब विषाद के शिल्प बने हुए लगते हैं।

प्रश्न 4. 'दुन्दुभि-मृदंग-तूर्य शान्त-सब मौन हैं। फिर भी पुकार-सी है। पूँज रही व्योम में '- उक्त पंक्तियों का आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर: पिछोला के किनारे महलों में कभी जीवन की जगमगाहट थी। नगाड़ों , मृदंग, दुंदुभी तथा तुरही की मधुर ध्वनियाँ जो रण घोष तथा विजय घोष के रूप में बजाए जाते थे वे अब शांत पड़े हैं। लोगों में निराशा और हताशा के कारण महाराणा प्रताप की प्रतिज्ञा पूरी नहीं हुई है। ये महल उसकी दु:खद याद में डूबे हैं, फिर भी उनमें से उठकर एक पुकार आकाश में गूंजती है कि क्या कोई वीर और साहसी उस प्राचीन गौरव को पुन: स्थापित करेगा।

प्रश्न 5. खेवा की पतवार कौन खींच रहा है और कहाँ ले जा रहा है?

उत्तर: खेवा की पतवार समय – रूपी मल्लाह (नाविक) खींच रहा है। समय का मल्लाह महाराणाओं के प्राचीन ऐश्वर्य और गौरव की नौका को खे रहा है। वह इसको गहरे अन्धकाररूपी दुर्भाग्य के सागर में खींचकर ले जा रहा है। इस नौका के चारों ओर दुर्भाग्य जैसा अनन्त सागर उमड़ रहा है। जिसमें प्रकाश की कोई किरण भी नहीं है। इन महाराणाओं के अतीतकालीन गौरव के पुनरुद्धार की कोई आशा नहीं है। समय रूपी मल्लाह महाराणा के औजस्वी गौरव को अनंत की ओर लिए जा रहा है।

निबन्धात्मक प्रश्न

प्रश्न 1. 'पेशोला की प्रतिध्वनि ' कविता का मूलभाव लिखिए।

उत्तर: 'पेशोला की प्रतिध्वनि राष्ट्र प्रेम से ओत-प्रोत है। इस कविता में कवि उदयपुर की पिछोला झील के किनारे बने हुए महाराणाओं के महलों और उनके झील में बने प्रतिबिम्बों के माध्यम से भारतीय लोगों को पुकार कर बार-बार कह रहा है कि हम आज हमारी पुरानी अस्मिता को भूल कर सो गए हैं। हमें पुनः जागना है तथा देश के पुनरुद्धार का भार उठाना है। उदयपुर स्थित पिछोला झील के किनारे पर महाराणाओं के महल बने हुए हैं। उनका प्रतिबिम्ब इस झील की विशाल जलराशि में बन रहा है। ये महल महाराणाओं के प्राचीन ऐश्वर्य और गौरव के स्मारक हैं। ये महल याद दिलाते हैं कि कभी देश में वैभव और गरिमा की बाढ़ आई हुई थी। ये महल तथा झील के जल में बनी हुई उनकी छाया लोगों से कह रही है कि वे अपने अतीत को भूल गए हैं। महलों की ये छायाएँ स्वदेशवासियों को विस्मृति की निद्रा से जगाकर उनसे स्वदेश के गौरवपूर्ण इतिहास को पुनः पढ़ने का आग्रह कर रही हैं। इस जल में बने प्रतिबिम्बों से एक पुकार उठ रही है। जो देशवासियों को जगाने और अपने अतीत के गौरव को पुनः स्थापित करने का आह्वान कर रही है। कवि ने इन महलों की परछाईं के माध्यम से देशवासियों का पुन: जागरण का संदेश दिया है। स्वदेश की भूतकालीन गरिमा को पुनः स्थापित करना जरूरी है। यह कार्य किसी को तो करना ही होगा।

प्रश्न 2. पठित कविता के आधार पर प्रसाद के काव्य और व्यक्तित्व पर प्रकाश डालिए।

उत्तर: प्रसाद जी प्रतिभा एवं कौशल के धनी होने के साथ स्वभाव से विनम्र थे। अन्तर्मुखी प्रवृत्ति के साथ परिश्रमी स्वभाव इनकी विशेषता रही है। प्रसाद जी के

THE HINDI PAGE जाने कुछ नया www.thehindipage.com

काव्य और व्यक्तित्व पर प्रकाश डालने के लिए निम्नलिखित बिंदु उल्लेखनीय हैं-

काव्य रचनाएं -

प्रसादजी बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। उनकी लेखनी ने कविता, नाटक कहानी, उपन्यास एवं निबंध आदि सभी विधाओं को समृद्ध किया है आपकी विविध काव्य रचनाएँ इस प्रकार है -

मुक्तक काव्य संग्रह - (1) चित्राधार (ब्रजभाषा में) (2) कानन कुसुम (खड़ी बोली हिंदी का प्रथम संग्रह). (3) झरना (25 कविताएँ, बाद में 55). (4) लहर (43 कविताएँ)।

प्रबंध काव्य - प्रेम राज्य' (2) वनमिलन (3) अयोध्या का उद्धार (4) शोकोच्छवास (5) प्रेम-पथिक (पहले ब्रज भाषा में तथा बाद में खड़ी बोली में प्रकाशन) , (6) महाराणा का महत्व (7) आँसू (8) कामायनी (महाकाव्य)। 'कामायनी' महाकाव्य पर इन्हें मंगला प्रसाद पारितोषिक भी प्राप्त हुआ।

नाटक- (1) सज्जन, (2) कल्याणी, (3) करुणालय, (4) विशाख, (5) अजातशत्रु, (6) जनमेजय का नाग यज्ञ , (7) कामना , (8) स्कन्दगुप्त , (9) एक घूँट , (10) चन्द्रगुप्त, (11) ध्रुवस्वामिनी।

कहानियाँ- पाँच कहानी संग्रह हैं- (1) छाया (2) प्रतिध्वनि (3) आकाशदीप (4) आँधी, (5) इन्द्रजाल।

उपन्यास- कुल तीन उपन्यास लिखे जिनमें एक अधूरा रहा- (1) कंकाल , (2) तितली (3) इरावती (अधूरा)

निबंध- साहित्यिक निबन्ध - (1) प्रकृति सौन्दर्य (2) भक्ति (3) हिन्दी साहित्य सम्मेलन (4) सरोज (5) हिंदी कविता का विकास।

ऐतिहासिक निबन्ध - (1) सम्राट चन्द्रगुप्त मौर्य , (2) मौर्यों का राज्य परिवर्तन , (3) आर्यावर्त का प्रथम सम्राट, (4) दशराज युद्ध।

समीक्षात्मक निबन्ध - (1) चम्पू (2) कवि और कविता (3) कविता का रसास्वाद (4) काव्य और कला (5) रहस्यवाद (6) रस (7) नाटकों में रस का प्रयोग (8) नाटकों का प्रारम्भ (9) रंगमंच इत्यादि।

व्यक्तित्व -

प्रसाद छायावाद के प्रणेताओं में से एक कवि हैं मूलतः प्रेम और सौंदर्य के कवि रहे हैं। इसके अलावा इनके काव्य में निम्नांकित विशेषताएं पाई जाती हैं - (1) विषय की नवीनता (2) नवीन कल्पनाएँ (3) प्राकृतिक और मानवीय सौन्दर्य का चित्रण (4) लाक्षणिक वक्रता (5) भावनाओं का सूक्ष्म चित्रण (6) रहस्यात्मकता आदि छायावादी विशेषताओं से युक्त (7) सौंदर्य चेतना के साथ भारतीय इतिहास , दर्शन और संस्कृति के प्रति अनुराग तथा (8) राष्ट्रीय चेतना ।

इस प्रकार प्रसाद के काव्य में छायावादी सौन्दर्यपरकता एवं भावुकता के साथ भारतीय संस्कृति के उज्ज्वल पक्षों और इतिहास के गौरवपूर्ण पन्नों का उजला रंग भी मिलता है जो राष्ट्रवादी भावनाओं को जाग्रत करता है।

कक्षा 12 हिन्दी साहित्य - अध्याय 09 - 'पेशोला की प्रतिध्वनि - जयशंकर प्रसाद

कवि परिचय

जयशंकर प्रसाद का जन्म 30 जनवरी , 1890 को वाराणसी के एक संभ्रान्त परिवार में हुआ। सुंघनी साहू परिवार के बाबू देवी प्रसाद इनके पिता थे। माता का नाम मुन्नी देवी था। कविता करने की प्रवृत्ति आप में बचपन से ही रही। सातवीं कक्षा तक क्वींस कॉलेज में अध्ययन किया।

THE HINDI PAGE जाने कुछ नया www.thehindipage.com

इसके बाद पिता का असामयिक निधन हो गया , अतः आगे की पढ़ाई उर्दू , हिन्दी, संस्कृत एवं अंगरेजी विषय के साथ घर पर ही हुई। पारिवारिक समस्याओं का सामना करते हुए भी आपने स्वाध्याय जारी रखा। प्रसाद जी की मित्रता अपने समय के ख्याति प्राप्त लोगों से रही, जिनमें राय कृष्णदास, केदारनाथ पाठक, मैथिलीशरण गुप्त, पंत, निराला, प्रेमचन्द, महादेवी वर्मा, जैनेन्द्र आदि प्रमुख हैं। प्रसाद जी प्रतिभा एवं कौशल के धनी होने के साथ स्वभाव से विनम्र थे। अन्तर्मुखी प्रवृत्ति के साथ परिश्रमी स्वभाव इनकी विशेषता रही है।

प्रसादजी बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। उनकी लेखनी ने कविता , नाटक कहानी, उपन्यास एवं निबंध आदि सभी विधाओं को समृद्ध किया है आपकी विविध काव्य रचनाएँ इस प्रकार है -

मुक्तक काव्य संग्रह- (1) चित्राधार (ब्रजभाषा में) (2) कानन कुसुम (खड़ी बोली हिंदी का प्रथम संग्रह) (3) झरना (25 कविताएँ, बाद में 55) (4) लहर (43 कविताएँ)।

प्रबंध काव्य- प्रेम राज्य ' (2) वनमिलन (3) अयोध्या का उद्धार (4) शोकोच्छवास (5) प्रेम-पथिक (पहले ब्रज भाषा में तथा बाद में खड़ी बोली में प्रकाशन), (6) महाराणा का महत्व (7) आँसू (8) कामायनी (महाकाव्य)। 'कामायनी' महाकाव्य पर इन्हें मंगला प्रसाद पारितोषिक भी प्राप्त हुआ।

नाटक- (1) सज्जन, (2) कल्याणी, (3) करुणालय, (4) विशाख, (5) अजातशत्रु, (6) जनमेजय का नाग यज्ञ, (7) कामना, (8) स्कन्दगुप्त, (9) एक घूँट, (10) चन्द्रगुप्त, (11) ध्रुवस्वामिनी।

कहानियाँ- पाँच कहानी संग्रह हैं- (1) छाया. (2) प्रतिध्वनि (3) आकाशदीप (4) आँधी , (5) इन्द्रजाल ।

उपन्यास- कुल तीन उपन्यास लिखे जिनमें एक अधूरा रहा- (1) कंकाल , (2) तितली (3) इरावती (अधूरा)

निबंध- साहित्यिक निबन्ध- (1) प्रकृति सौन्दर्य (2) भक्ति (3) हिन्दी साहित्य सम्मेलन (4) सरोज (5) हिंदी कविता का विकास

ऐतिहासिक निबन्ध- (1) सम्राट चन्द्रगुप्त मौर्य, (2) मौर्यों का राज्य परिवर्तन, (3) आर्यावर्त का प्रथम सम्राट, (4) दशराज युद्ध।

समीक्षात्मक निबन्ध- (1) चम्पू (2) कवि और कविता (3) कविता का रसास्वाद (4) काव्य और कला (5) रहस्यवाद (6) रस (7) नाटकों में रस का प्रयोग (8) नाटकों का प्रारम्भ (9) रंगमंच इत्यादि।

प्रसाद छायावाद के प्रणेताओं में से एक कवि हैं मूलतः प्रेम और सौंदर्य के कवि रहे हैं। इसके अलावा इनके काव्य में निम्नांकित विशेषताएं पाई जाती हैं- (1) विषय की नवीनता (2) नवीन कल्पनाएँ (3) प्राकृतिक और मानवीय सौन्दर्य का चित्रण (4) लाक्षणिक वक्रता (5) भावनाओं का सूक्ष्म चित्रण (6) रहस्यात्मकता आदि छायावादी विशेषताओं से युक्त (7) सौंदर्य चेतना के साथ भारतीय इतिहास, दर्शन और संस्कृति के प्रति अनुराग तथा (8) राष्ट्रीय चेतना ।

THE HINDI PAGE जाने कुछ नया www.thehindipage.com

इस प्रकार प्रसाद के काव्य में छायावादी सौन्दर्यपरकता एवं भावुकता के साथ भारतीय संस्कृति के उज्ज्वल पक्षों और इतिहास के गौरवपूर्ण पन्नों का उजला रंग भी मिलता है जो राष्ट्रवादी भावनाओं को जाग्रत करता है। 15 नवंबर 1937 को उनका देहावसान हो गया।

पाठ परिचय

इस अध्याय में दी गई कविता- 'पेशोला की प्रतिध्वनि राष्ट्र प्रेम से ओत-प्रोत है। इस कविता में कवि उदयपुर की पिछोला झील के किनारे बने हुए महाराणाओं के महलों और उनके झील में बने प्रतिबिम्बों के माध्यम से भारतीय लोगों को पुकार कर बार-बार कह रहा है कि हम आज हमारी पुरानी अस्मिता को भूल कर सो गए हैं। हमें पुनः जागना है तथा देश के पुनरुद्धार का भार उठाना है अत: कवि पूछता है कि वह कौन होगा? विचार हमें करना है कि वह मैं ही हूँ।

सन्दर्भ एवं प्रसंग सहित व्याख्याएँ

1. अरुण-करुण बिम्ब
वह निर्धूम, भस्म रहित ज्वलन पिण्ड।
विकल विवर्तनों से
विरल प्रवर्तनों में
श्रमित नमित-सा
पश्चिम के व्योम में है आज निरवलम्ब-सा।
आहुतियाँ विश्व की अजस्र लुटाता रहा
सतत् सहस्त्र कर-माला से
तेज ओज बल जो वदान्यता कदम्ब-सा।

शब्दार्थ – अरुण = लाल। बिम्ब = गोला/छायाचित्र। निर्धूम = बिना धुएँ के। पिण्ड = ठोस। विवर्तन = चक्कर। विरल = कम। प्रवर्तन = नवीन आचार-विचारे , परिवर्तन। श्रमित = थका हुआ। आहुति = हवन-सामग्री। सतत् = निरन्तर। कर-माला = किरण समूह। वदान्यता = उदारता , दानशीलता। कदंब = समूह।

सन्दर्भ तथा प्रसंग – प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक 'सरयू' में संकलित 'पेशोला की प्रतिध्वनि' नामक कविता से लिया गया है। इसके रचयिता जयशंकर प्रसाद हैं। कवि यहाँ पेशोला झील के जल में पड़ने वाली महाराणा के महलों की परछाईं का वर्णन करता है। संध्याकाल में वहाँ के दृश्य का चित्रण कवि इसकी पृष्ठभूमि के रूप में कर रहा है।

व्याख्या - कवि जयशंकर प्रसाद पिछोला झील के पास सूर्यास्त के समय का वर्णन करते हुए कहते हैं कि आकाश में सूर्य का लाल करुणापूर्ण गोला धुएँ से रहित तथा भस्महीन जलता हुआ ठोस नक्षत्र जैसा प्रतीत हो रहा है। वह सांसारिक चक्रों तथा अन्य नवीन आचार-विचारों से थका

और झुका हुआ-सा तथा बेसहारा-सा पश्चिमी आकाश में स्थित है। वह अपनी हजारों किरणों के हाथों से अपने तेज-शक्ति तथा ओज की अपार आहुतियाँ निरन्तर कदम्ब सी उदार और दानशील होकर विश्व को लुटा रहा है। उसका संपूर्ण पराक्रम यश और तेज जैसे अब धीरे-धीरे शिथिल हो गया है।

विशेष –

1. पश्चिमी आकाश में सूर्यास्त का वर्णन है।
2. सूर्य के उदार और दानी रूप का वर्णन है।
3. भाषा संस्कृतनिष्ठ, साहित्यिक खड़ी बोली है।
4. मुक्त छंद, रूपक, अनुप्रास, उपमा आदि अलंकार हैं।

2. पेशोला की उर्मियाँ हैं, शान्त, घनी छाया में
तट-तरु है चित्रित तरल चित्रसारी में।
झोंपड़े खड़े हैं बने शिल्प के विषाद केदग्ध अवसाद से।।
धूसर जलद-खण्ड झटके पड़े हैं।
जैसे विजन अनन्त में।
कालिमा बिखरती है संध्या के कलंक-सी,
दुन्दुभि-मृदंग-तूर्य शान्त-सब मौन हैं।

शब्दार्थ – पेशोला = पिछोला झील। उर्मियाँ = लहरें। चित्रसारी = चित्रशाला। दग्ध = जला हुआ। अवसाद = दु:ख। धूसर = धूल से सने हुए। विजन = निर्जन। अनन्त = आकाश। कालिमा = कालापन, अँधेरापन। दुंदुभि = नगाड़ा। मृदंग = ढोलक जैसा एक ताल वाद्य। तूर्य = तुरही।

सन्दर्भ तथा प्रसंग – प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक 'सरयू' में संकलित कविता 'पेशोला की प्रतिध्वनि' से लिया गया है। इसके रचयिता जयशंकर प्रसाद हैं। संध्या का समय है। पश्चिम में सूर्य अस्त हो रहा है। महाराणा के महलों की परछाई पिछोला झील में बन रही है।

व्याख्या – उक्त प्रसंग के अंतर्गत कवि कहता है कि पिछोला झील में उठती हुई लहरें शान्त हैं। झील के जल में उसके तट पर उगे हुए वृक्षों का प्रतिबिम्ब बन रहा है। जो चित्रों से जड़ी हुई तरल चित्रशाला जैसी लगती है। पिछोला के किनारे बने महाराणाओं के महल झोंपड़ों के रूप में प्रतिबिंबित हो रहे हैं। उस जल में महलों के प्रतिबिम्ब परतंत्रता के दुख और घोर निराशा के कारण विषादमग्न से दिखाई देते हैं, जैसे आकाश में धूल के रंग के बादलों के टुकड़ों तैरते रहते हैं वैसे ही आज भी वहां झील के शांत वातावरण में महाराणा प्रताप की पुकार चारों ओर भटक रही है। धीरे-धीरे छाने वाला अन्धकार संध्या पर लगे कलंक जैसा लग रहा है। वहाँ महलों के प्रतिबिम्ब में पूर्ण निस्तब्धता है तथा पहले की तरह नगाड़ों , मृदंग, तुरही आदि बाजों की कोई आवाज सुनाई नहीं दे रही है।

THE HINDI PAGE
जाने कुछ नया
www.thehindipage.com

विशेष –

1. उदयपुर की पिछोला झील और महाराणा के महलों के नीरस वातावरण का चित्रण है।
2. ये महल अपने अतीत वैभव का स्मरण करके दु:खी से लग रहे हैं।
3. भाषा संस्कृतनिष्ठ, साहित्यिक खड़ी बोली है।
4. अनुप्रास तथा उपमा अलंकार हैं। मुक्त छंद है।

3. फिर भी पुकार-सी है गूँज रही व्योम में
कौन लेगा भार यह?
कौन विचलेगा नहीं?
दुर्बलता इस अस्थि मांस की
ठोक कर लोहे से, परख कर वज्र से
प्रलयोल्का-खण्ड के निकष पर कसकर
चूर्ण अस्थि पुंज सा हँसेगा अट्टाहास कौन?
साधना पिशाचों की बिखरे चूर-चूर होके
धूलि-सी उड़ेगी किस दृप्त फूत्कार से।

शब्दार्थ – व्योम = आकाश। विचलेगा = विचलित होना। अस्थि मांस = हाड़-मांस का मनुष्य। प्रलयोल्का = प्रलयंकारी कठोर पत्थर। निकष = कसौटी। अट्टाहास = मुक्त हँसी। दृप्त = प्रबल। फूत्कार = फुफकार।

सन्दर्भ तथा प्रसंग – प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक 'सरयू' में संकलित "पेशोला की प्रतिध्वनि शीर्षक कविता से लिया गया है। इसके रचयिता जयशंकर प्रसाद हैं। पेशोला झील में उदयपुर के महाराणाओं के महल प्रतिबिम्बित हो रहे हैं। वे स्वदेशवासियों से पूछ रहे हैं कि क्या उनमें कोई ऐसा देशप्रेमी है जो उनके अतीत के गौरव को पुन:स्थापित कर सके।

व्याख्या – कवि कहता है कि सायंकाल सूर्यास्त का समय है। झील के आस-पास पूर्ण शांति छाई है किन्तु तब भी आकाश में महाराणा प्रताप की पुकार गूँज रही है कि देश की गरिमा और गौरव की सुरक्षा का भार कौन उठायेगा ? कौन ऐसा दृढ़ संकल्प वाला होगा जो अविचलित रहकर अपना यह उत्तरदायित्व पूरा करेगा। इतने लम्बे पराधीनता काल में देशवासियों में जो दुर्बलता आ गई है , उसको दूर कर उनको दृढ़ और मजबूत कौन बनाएगा। उनमें लोहे और वज्र जैसी कठोरता कौन पैदा करेगा? जो अपने आत्मविश्वास तथा दृढ़ता को कठिन परिस्थितियों के कठोर पत्थर की कसौटी पर कसकर हँसते हुए अपने शरीर पर शत्रुओं के प्रहार सहने को तैयार हो सके । कवि कहता है कि ऐसा कौन है जो जो स्वयं को हवन करके अट्टहास करते हुए शत्रु के हृदय को कंपा दे। कवि कहता है कि महाराणा प्रताप की तरह ऐसा कौन है जिसकी गर्व युक्त फुफकार से पिशाचों की साधना अर्थात देश के शत्रुओं के गलत इरादों को चूर चूर कर सके।

THE HINDI PAGE
जागे कुछ नया
www.thehindipage.com

विशेष –

1. अतीत के गौरव और गरिमा को पुनर्स्थापना का आह्वान किया गया है।
2. वीर रस है। राष्ट्रीय गौरव को जाग्रत किया गया है।
3. भाषा संस्कृतनिष्ठ, साहित्यिक खड़ी बोली है।
4. रूपक, उपमा, पुनरुक्तिप्रकाश तथा प्रश्न अलंकार हैं।

4. कौन लेगा भार यह?
जीवित है कौन?
साँस चलती है किसकी
कहता है कौन ऊँची छाती कर, मैं हूँ –
मैं हूँ मेवाड़ मैं,
अरावली-श्रृंग-सा समुन्नत सिर किस का?
बोलो, कोई बोलो-अरे, क्या तुम सब मृत हो ?

शब्दार्थ – भार = उत्तरदायित्व। ऊँची छाती कर = साहस एवं दृढ़ता के साथ। श्रृंग = पर्वत की चोटी।

सन्दर्भ तथा प्रसंग – प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक 'सरयू' में संकलित 'पेशोला की प्रतिध्वनि' शीर्षक कविता से लिया गया है। इसके रचयिता जयशंकर प्रसाद हैं। कवि को लगता है कि पिछोला झील के पास खड़े ये महल लोगों का आह्वान करके कह रहे हैं कि उस प्राचीन गरिमा को पुनः स्थापित करें।

व्याख्या – कविवर जयशंकर प्रसाद के अनुसार झील में पड़ रही महलों की परछाईं पूछ रही है कि देश के प्राचीन गौरव एवं गरिमा पुनः स्थापित करने का महान दायित्व आज कौन उठायेगा। पराधीनता में जकड़कर देशवासी महान् पुरातन संस्कृति को भुला बैठे हैं। वे जीवित रहकर भी मरे हुए-से हैं। उनमें उत्साह और कोई साहस नहीं है। ये महल पूछ रहे हैं कि क्या कोई साहसी पुरुष आगे आएगा और सिद्ध करेगा कि वह जीवित है। वह अपनी छाती ठोककर कहेगा कि मैं मेवाड़ हूँ। मैं मेवाड़ वीर पुत्र हूँ। मेरा सिर स्वदेश के गौरव से अरावली पर्वत की चोटी के समान ऊँचा उठा हुआ है। ये परछाइयाँ ललकार कह रही हैं कि कोई साहसी देशप्रेमी मेरे आह्वान से आगे आये और यह जिम्मेदारी उठाये। अन्यथा ऐसा लगेगा कि देश में कोई वीर पुरुष है ही नहीं, सब मरे हुए के समान हैं।

विशेष –

1. स्वदेश के गौरव को स्थापित करने के लिए कवि ने प्रेरित किया गया है।
2. स्वदेश प्रेम का संदेश दिया गया है।
3. साहित्यिक खड़ी बोली हिंदी का प्रयोग हुआ है।
4. उपमा, अनुप्रास तथा प्रश्न अलंकार हैं।

THE HINDI PAGE जाने कुछ नया www.thehindipage.com

5. आह ! इस खेवा की !
कौन थामता है पतवार ऐसे अंधड़ में,
अन्धकार-पारावार गहन नियति-सा।
उमड़ रहा है, ज्योति-रेखाहीन-क्षुब्ध हो।
खींच ले चला हैकाल-धीवर अनन्त में
साँस-सफरी-सी अटकी है किसकी आशा में?

शब्दार्थ – खेवा = नौका। अंधड़ = आँधी। पारावार = समुद्र। गहन नियति = दुर्भाग्य। धींवर = नाविक। सफरी = मछली।

सन्दर्भ तथा प्रसंग – प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक 'सरयू' में संकलित कविता "पेशोला की प्रतिध्वनि" से उद्धृत है। इसके रचयिता जयशंकर प्रसाद हैं। कवि कहता है कि पेशोला झील में बनने वाले महलों के प्रतिबिम्ब स्वदेश में व्याप्त पराधीनता तथा देश की प्राचीन अस्मिता के प्रति उपेक्षा का भाव देखकर निराश हैं।

व्याख्या – कवि कहता है कि सर्वत्र निराशापूर्ण वातावरण है। पराधीनता और गौरवशाली अतीत के प्रति व्याप्त अज्ञान के वातावरण में स्वदेश रूपी नौका की पतवार थामने वाला कोई दिखाई नहीं दे रहा। चारों तरफ निराशा और उपेक्षा का अँधेरा दुर्भाग्य के समान छा रहा है। आशा के प्रकाश की एक रेखा भी दिखाई नहीं दे रही। समय का नाविक देश की इस नौका को अज्ञात अनन्त सागर में खींचे ले जा रहा है। उसकी साँस किसी जाल में फंसी मछली के समान उस आशा में अटकी है कि वीर पुरुष आगे आयेगा और स्वदेश को इस पराधीनता और निराशा के जाल से मुक्त करेगा।

विशेष –

1. स्वदेश में व्याप्त निराशा और हीनता के भावों पर दुःख व्यक्त किया गया है।
2. कवि ने देशवासियों को पराधीनता और निराशा से मुक्त होकर भारत के पुरातन गौरव को पुन: स्थापित करने की प्रेरणा दी है।
3. तत्सम शब्दावली युक्त प्रवाहपूर्ण खड़ी बोली है।
4. मुक्त छन्द है, वीर रस है। उपमा, रूपक, अनुप्रास अलंकार हैं।

6. आज भी पेशोला के
तरल जल-मण्डलों में
वही शब्द घूमता-सा
गूँजता विकल है,
किन्तु वह ध्वनि कहाँ।
गौरव-सी काया पड़ी माया है प्रताप की
वही मेवाड़।
किन्तु आज प्रतिध्वनि कहाँ?

शब्दार्थ – पेशोला = पिछोला झील। जल-मण्डल = झील में भरा पानी। विकल = व्याकुल। काया = शरीर। प्रताप = महाराणा प्रताप। प्रतिध्वनि = गूंज।

सन्दर्भ तथा प्रसंग – प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक 'सरयू' में संकलित "पेशोला की प्रतिध्वनि" शीर्षक कविता से उद्धृत है। इसके रचयिता जयशंकर प्रसाद हैं। कवि स्वदेश में व्याप्त पराधीनता को देखकर व्याकुल है। वह देश के प्राचीन गौरव की उपेक्षा देखकर भी पीड़ित है। वह झील में बने महाराणा के महलों का प्रतिबिम्ब दिखाकर लोगों को सजग और सावधान करना चाहता है।

व्याख्या – कवि कहता है कि उदयपुर की पिछोला झील की विशाल जलराशि में स्वदेशवासियों को देश में व्याप्त पराधीनता तथा उपेक्षा के प्रति सजग करने वाले प्रेरणास्पद शब्द आज भी घूमते से लग रहे हैं, उनमें व्याकुलती भरी हुई है। किन्तु वैसी गूंज आज सुनाई नहीं दे रही। यह महाराणा प्रताप का वही मेवाड़ है। उसकी गौरवरूपी काया आज भी इस झील के जल में दिखाई दे रही है। महलों के ये प्रतिबिम्ब उस मेवाड़ के पुरातन इतिहास और गौरव का स्मरण कराते हैं किन्तु आह्वान से भरे हुए उन शब्दों की वह प्रतिध्वनि आज सुनाई नहीं दे रही।

विशेष –

1. कवि ने देश के प्राचीन गौरव के प्रति उपेक्षा की भावना पर क्षोभ व्यक्त किया है।
2. कवि चाहता है कि देश के युवक महाराणा प्राचीन की तरह स्वदेश की स्वाधीनता तथा प्राचीन गौरव की सुरक्षा में लगें।
3. भाषा बोधगम्य प्रवाहपूर्ण खड़ी बोली है।
4. वीर रस है, ओज गुण है, मुक्त छंद है, उपमा अलंकार है।

THE HINDI PAGE
जाने कुछ नया
www.thehindipage.com

Join Telegram-
https://t.me/bhartibhandar

Our Website-
https://thehindipage.com/blog/

Join Telegram-
https://t.me/siddhivinayakpariwarsangaria

Our Youtube Channel-
https://www.youtube.com/channel/UCJlUDM0uPIL7kEO0ZMdDcHg